ओ३म्

आयोजन का वृतान्त

# ‘वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार जन्मशती महोत्सव हर्षोल्लास एवं श्रद्धा के वावावरण में सम्पन्न’

**–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार जन्मशती महोत्सव 2 नवम्बर, 2014 को हरिद्वार में देवपुरा स्थित भारत सेवाश्रम सभागार में भव्य एवं श्रद्धा के वातावरण में सम्पन्न हुआ। पूर्वान्ह 11.30 बजे से वेद मन्दिर, गीताश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार में यज्ञ सम्पन्न हुआ





जिसमें आचार्य जी के सुपुत्र श्री डा. विनोद चन्द्र विद्यालंकार जी एवं उनके परिवार के अनेक सदस्य यजमान के आसन पर विराज थे। यज्ञ की ब्रह्मा गुरूकुल चोटीपुरा की विदुषी आचार्या और आचार्य रामनाम वेदालंकार जी की शिष्या डा. सुकामा जी थी। यज्ञ में आचार्य जी की शिष्य मण्डली एवं बड़ी संख्या में अतिथिगण भी सम्मिलित थे। यज्ञ के पश्चात गुरूकुल चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणियों ने 3 भजन प्रस्तुत किये। पहला भजन था **‘भरोसा कर तू ईश्वर पर तुझे रोना नहीं होगा, ये जीवन बीत जायेगा तुझे रोना नहीं होगा।** दूसरा स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती लिखित प्रसिद्ध भजन था जिसके बोल थे **‘बरस बरस रस वारी मैया, बूंद बूंद पर तैरी जाऊं बार बार बलिहारी मैय्या’ आदि।** अपने संक्षिप्त प्रवचन में यज्ञ की ब्रह्मा डा. सुकामा जी ने कहा कि ईश्वर का विश्वास तथा साथ सदा बना रहता है। जब दुनिया के सारे साथ छूट जाते हैं तब भी ईश्वर का साथ और विश्वास बना रहता है। उन्होंने आगे कहा कि जब मैं और मेरा का सम्बन्ध छूट जाता है तब ईश्वर से प्राप्त होने वाले नित्य सुख की प्राप्ति होती है। अतः हम उस परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि मेरा उससे कभी सम्बन्ध न छूटे। आपने वेद मन्त्र **‘स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम’** मन्त्र का उच्चारण किया और कहा कि सृष्टि की आदि में ब्रह्मा जी से वेदों की परम्परा चली। हमारे **आचार्य वेदमूर्ति डा. रामनाथ वेदालंकार जी** ने सामवेद भाष्य कर एवं वेदों पर मौलिक ग्रन्थ लिखकर उस परम्परा को आगे बढ़ाया। विदुषी आचार्या ने कहा कि प्राचीन काल में साक्षात्कृत–धर्मा ऋषि हुए हैं जिन्होंने अपने उपदेशों द्वारा वेदार्थ को प्रकाशित किया। यज्ञ के पश्चात वहां आगन्तुक विद्वान व अतिथि अपने–अपने परिचितों से मिल कर कुशल–क्षेम पूछते तथा परस्पर चर्चायें करते दीख रहे थे। कुछ समय बाद भोजन का समय होने पर सभी में मिलकर यज्ञशाला के चारों ओर के स्थान पर स्वादिष्ट भोजन किया।

मनमोहन कुमार आर्य

**वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी को समर्पित ‘‘श्रुति–मन्थन’ ग्रन्थ का लोकार्पण, विद्वत्वरेण्य सम्मान तथा श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन मध्यान्होत्तर 2. 30 बजे से वेद मन्दिर से लगभग 2 किमी. की दूरी पर स्थित भारत सेवाश्रम संघ के भव्य सभागार में आयोजित व सम्पन्न हुआ।** इस निमित्त बनाये गये विशाल एवं भव्य मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध विद्वान एवं निवर्तमान शंकराचार्य **स्वामी सत्यमित्रानन्द** एवं अध्यक्ष **प्रोफेसर सुभाष विद्यालंकार** सहित मंच पर **स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती,** गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. सरेन्द्र कुमार**, विधायक और आचार्य जी के शिष्य **स्वामी यतिश्वरानन्द, डा. महावीर अग्रवाल, डा. वेद प्रकाश शास्त्री, डा. हरि गोपाल शास्त्री**, कुलपति, गुरूकुल–महाविद्यालय, ज्वालापुर,

आईपीएस एवं आईजी दिल्ली डा. आनन्द आर्य, मेयर श्री मनोज गर्ग, चिकित्सक श्री सुनील कुमार जोशी एवं डा. अनिता आर्या जी आदि जन उपस्थित थे। आयोजन के आरम्भ में **डा. विनोद चन्द्र विद्यालंकार** ने आयोजन की भूमिका प्रस्तुत की और आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी के अपने बाल्यकाल में स्वामी श्रद्धानन्द जी को लिखे पत्र का विवरण प्रस्तुत कर स्वामी जी से प्राप्त उनके पत्र के उत्तर में कही गई बातों पर प्रकाश डाला। **उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बालक रामनाथ को लिखा था कि जीवन में कुलमाता गुरूकुल की सेवा करना।** उन्होंने कहा कि स्वामीजी की इस प्रेरणा से बालक रामनाथ आगे चल कर आचार्य रामनाथ वेदालंकार बना जिनका हम आज जन्मशती महोत्सव मना रहे हैं। आयोजन के अध्यक्ष प्रो. सुभाष विद्यालंकार जी का परिचय भी दिया गया जिसमें बताया गया कि आप आचार्य जी के शिष्य रहे हैं और आप सन् 1949 में गुरूकुल के स्नातक बने थे। सभी प्रमुख अतिथियों के मंचासीन हो जाने पर दीप प्रज्जवलन की विधि पूरी की गई। स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी, स्वामी प्रणवानन्द, प्रो. सुभाष विद्यालंकार, प्रो. सुरेन्द्र कुमार, डा. वेद प्रकाश शास्त्री, डा. महावीर अग्रवाल एवं डा. विनोद चन्द्र विद्यालंकार जी ने इस प्रकिया को पूरा किया।

दीप प्रज्जवलन के पश्चात ऋषिकेश के एक गुरूकुल के 2 ब्रह्मचारियों ने सस्वर साम गान प्रस्तुत किया। इसके बाद गुरूकुल चोटीपुरा की 6 कन्याओं ने संस्कृत के श्लोकों को मधुर ध्वनि से गाकर प्रस्तुत किया। संचालन का कार्य डा. महावीर अग्रवाल जी ने करते हुए निवर्तमान शंकराचार्य स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी जी का गुणानुवाद कर उनका फूलमालाओं से स्वागत करने की प्रकिया को सम्पन्न कराया। मंचस्थ अन्य विद्वानों का भी माल्यार्पण कर सम्मान किया गया जिनमें प्रो. सुभाष विद्यालंकार, डा. सुरेन्द्र कुमार, डा. वेद प्रकाश शास्त्री, डा. आनन्द आर्य आईपीएस–आईजी, दिल्ली, स्वामी गणेशानन्द, स्वामी यतीश्वरानन्द सम्मिलित हैं। डा. महावीर अग्रवाल जी ने कहा कि आज का दिवस स्मरणीय एवं अभिनन्दनीय दिवस है। उन्होंने कहा कि ईश्वर गुरूओं का गुरू है। उसके बाद यदि किसी का सम्मान है तो वह अग्नि रूप धारण करके मानवता का कल्याण करने वाले परिव्राजक का है। आज हम ऐसे ही एक परिव्राजक स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी महाराज हमारे मध्य उपस्थित है जिससे हम स्वयं को धन्य अनुभव कर रहे हैं। उन्होंने स्वामी सत्यामित्रानन्द जी महाराज का आयोजन में पधारने का निमन्त्रण स्वीकार करने के लिए उनका आभार व्यक्त कर धन्यवाद किया।

डा. विनोद चन्द्र विद्यालंकार जी द्वारा लोकार्पण का कार्यक्रम सम्पन्न कराते हुए आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी को समर्पित किए जाने वाले ग्रन्थ **''श्रुति–मन्थन''** का परिचय दिया व उसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वह पंतनगर विश्वविद्यालय की सेवा से सन् 2002 में सेवा निवृत हुए। डा. महावीर अग्रवाल जी ने गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से आचार्य जी का अभिनन्दन किये जाने का प्रस्ताव किया जो किसी कारण से स्वीकृत न हो सका। इसके बाद आचार्य जी के प्रमुख शिष्यों ने उन पर गुरूकुल की पत्रिका का एक विशेषांक निकालने की योजना बनाई। वह भी कार्यरूप न ले सकी। एक कारण यह भी था कि आचार्य जी इस प्रकार के अपने सम्मान के प्रति उदासीन रहे। उसके पश्चात अप्रैल, 2013 में मृत्यु हो जाने के पश्चात 7 जुलाई, सन् 2013 को वेद मन्दिर, ज्वालापुर में आयोजित जन्मशती शुभारम्भ समारोह में उनकी जन्म शताब्दी मनाने का निर्णय लिया गया और इस अवसर पर श्रद्धांजलि स्वरूप 'श्रुति–मन्थन' के सम्पादन व प्रकाशन का भी निर्णय हुआ तथा सम्पादन का कार्य मुझे दिया गया। मैंने यह कार्य किया। इसमें जो भी अच्छी बातें हैं उनका श्रेय इनके लेखकों व सामग्री प्रदान करने वालों सहित मुख्य रूप से इसके **प्रकाशक श्री प्रभाकरदेव आर्य जी** को है और यदि कहीं कोई कमी रह गई हो तो उसका कारण मैं हूं। उनकी भूमिका और मार्गदर्शन के अनुसार लोकार्पण का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। **'श्रुति–मन्थन'** ग्रन्थ का लोकार्पण **स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी जी तथा प्रो. सुभाष विद्यालंकार जी** ने मिलकर किया। ग्रन्थ के 700 से अधिक पृष्ठों, भव्य साज–सज्जा व आकर्षक मुख पृष्ठ को देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। मुखपृष्ठ व अन्तिम कवर पृष्ठ पर

आचार्य जी के भव्य चित्र हैं। अन्दर के पृष्ठ आचार्य जी पर श्रद्धांजलि एवं उनके संस्मरणों से सम्बन्धित लेख, कवितायें व चित्र आदि के रूप में हैं जिन्हें अनेक अध्यायों में, प्रकाशकीय, पुरोवाक् व शुभाशंसा से आरम्भ होकर प्रथम 45 पृष्ठों में प्रणतिः के अन्तर्गत आचार्य जी पर संस्कृत व हिन्दी की कवितायें हैं। इसके बाद आचार्य जी की जीवन यात्रा पर डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी द्वारा लिखित सामग्री है। इसके अगले अध्याय **'अतीत के झरोखे'** में आचार्यजी का सान्निध्य प्राप्त विद्वानों एवं सुधीजनों की तूलिका के अन्तर्गत 37 लेख व श्रद्धांजलियां हैं। **'स्मृति–सौरभ'** अध्याय आचार्य जी के परिजनों द्वारा प्रस्तुत 34 लेखों का संकलन है। **'स्मृमियों के वातायन से'** अध्याय के अन्तर्गत 29 लेख शिष्य परम्परा द्वारा समर्पित श्रद्धा–सुमन नाम से हैं। इसके बाद आचार्यजी का पत्राचार है जिसमें प्रथम वह पत्र है जो कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी का बालक रामनाथ को आशीर्वाद पत्र है। आगामी अध्याय **'पर्यालोचन'** में 23 विद्वान शिष्यों द्वारा आचार्य जी के कार्यों का मूल्याकंन व महत्ता सूचक लेख हैं। **'श्रुति–सौरभ'** अध्याय में आचार्यप्रवर के 14 लेखों का संकलन हैं जिसका पहला लेख **'वेदों में सौर ऊर्जा का वैज्ञानिक प्रयोग'** एवं दूसरा **'वेदों का चमत्कारिक मनोबल है।'** अगले **'विचार–मंथन'** अध्याय में 9 लेखों का संकलन है। अन्तिम अध्याय **'काव्यामृतम्'** नाम से है जिसमें आचार्य जी कृत 8 काव्यों का पृष्ठ 715 से 723 तक संकलन है। एक परिशिष्ट **'वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार जन्मशती–वर्ष शुभारम्भ महोत्सव का आरम्भ'** नाम से आचार्य जी के पौत्र **श्री स्वस्ति अग्रवाल** द्वारा लिखित रिर्पोट है। ग्रन्थ के अन्त में 44 पृष्ठ आचार्य जी जुड़े पारिवारिक जनों एवं मुख्य–मुख्य अवसरों के रंगीन चित्र आदि दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी के ग्रन्थ के आरम्भ में पूरे पृष्ठ के दो भव्य एवं आकर्षक चित्र हैं। पुस्तक का मूल्य 600 रूपये अंकित है जो **'श्री घूड़मल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डोन सिटी'** से प्रकाशित एवं प्राप्त है। **हमारा विचार है कि आचार्य जी से किसी भी रूप में जुड़े व्यक्ति के पास यह संग्रहणीय ग्रन्थ अवश्य होना चाहिये।**

**'श्रुति–मंथन'** ग्रन्थ के लोकार्पण के पश्चात आर्य जगत के **विख्यात विद्वान एवं पूर्व सांसद पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी** के दुर्लभ अप्राप्य ग्रन्थ **''मुगल स्रामाज्य का क्षय और उसके कारण''** का लोकार्पण भी किया गया। इस दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ का प्रकाशन प्रसिद्ध आर्य प्रकाशन संस्थान **''श्री घूड़मल प्रह्लाद कुमार आर्य न्यास, हिण्डोन सिटी''** द्वारा इसके यशस्वी अध्यक्ष श्री प्रभाकरदेव आर्य जी ने किया है। पुस्तक लोकार्पण के सम्पन्न किये जाने के बाद **7 गुरूकुलों के संस्थापक व गुरूकुल गौतमनगर, दिल्ली सहित 8 गुरूकुलों को आर्ष पाठ विधि से संचालित करने वाले आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी को ''वेद–वेदांग रत्नागर'' सम्मान प्रदान कर उनका अभिनन्दन किया गया। स्वामीजी को एक शाल, अभिनन्दन पत्र एवं नगद धनराशि प्रदान की गई। अभिनन्दन पत्र का वाचन गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में वेद विभाग के अध्यक्ष डा. दिनेश चन्द्र शास्त्री जी ने किया।** स्वामीजी के सम्मान के पश्चात स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी जी ने अपने आशीर्वचनों में आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी को अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित की और बताया की वह अपने जीवन में गुरूकुल कांगड़ी में आचार्य जी से दो बार मिले थे। उन्होंने बहुत विनीत भाव से कहा कि इस सभागार में उपस्थित सभी लोग मेरे अराध्य हैं। स्वामीजी महाराज को इस अवसर आचार्य हरिशरण सिद्धान्तालंकार जी रचित चारों वेदों के हिन्दी भाष्य का एक सैट भी भेंट किया गया।

अभिनन्दन की श्रृंखला को जारी रखते हुए विश्व प्रसिद्ध चिकित्सक डा. सुनील कुमार जोशी का सम्मान किया गया। उनको भेंट किये गए अभिनन्दन पत्र का वाचन आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी के पौत्र श्री स्वस्ति अग्रवाल ने किया। उन्हें एक शाल, स्मृति चिन्ह व धनराशि भेंट कर सम्मनित किया गया। विद्वतवरेण्य कार्यक्रम में गुरूकुल चोटीपुरा की डा. अनीता आर्या को भी अभिनन्दन पत्र, एक शाल, स्मृति चिन्ह एवं धनराशि भेंट कर सम्मानित किया गया। इसके बाद वेद मन्दिर, गीताश्रम, ज्वालापुर के प्राण और आचार्य जी के सेवाव्रती शिष्य स्वामी यतीश्वरानन्द सरस्वती का डा. महावीर अग्रवाल जी द्वारा शाल भेंट कर स्वागत किया गया। सभा में अपने

अभिनन्दन पर बोलते हुए **स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने कहा कि आचार्य रामनाथ वेदालंकार ने अपने कार्यों से आर्ष परम्परा को आगे बढ़ाया। मेरा समय–समय पर अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मान किया गया है जिससे हमें और अधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि यह सम्मान पत्र तो है ही परन्तु इससे भी अधिक यह एक प्रेरणा–पत्र है। उन्होंने आचार्य जी के चरणों में अपनी विनीत श्रद्धांजलि प्रस्तुत की।** इनके पश्चात विश्व प्रसिद्ध चिकित्सक डा. सुनील कुमार जोशी तथा डा. अनिता आर्या ने भी आचार्यप्रवर को अपनी श्रद्धांजलियां प्रस्तुत कीं। डा. अनीता आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश का उल्लेख कर कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि **धार्मिक सभी लोग बन सकते हैं परन्तु विद्वान सब नहीं बन सकते।** उन्होंने कहा कि हमारे आचार्य रामनाथ जी में धार्मिकता एवं विद्वता की पराकाष्ठा थी। उन्होंने बताया कि डा. रामनाथ जी में अपनी विद्या का किंचित भी अभिमान नहीं था। उनकी विनयशीलता सब मिलने वालों को प्रभावित करती थी।

डा. अनीता आर्या जी के पश्चात आईपीएस एवं आईजी, दिल्ली डा. आनन्द कुमार आर्य जी ने आचार्यप्रवर को अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए कहा कि **वह सचमुच में ''वेदालंकार'' थे।** उन्होंने अपना सारा जीवन वेदों के चिन्तन व मनन में लगाया। आचार्यजी ने जन्म ही वेदों के प्रचार व प्रसार के लिए लिया था। प्रो. सुरेन्द्र कुमार, कुलपति, गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार ने बताया कि आचार्य जी में अहंकार नहीं था अपितु विनम्रता थी। उन्होंने कहा कि यदि चान्द्रवर्ष के अनुसार उनकी आयु की गणना करें तो उनका जीवन काल 101 वर्ष का होता है। आचार्य जी के शिष्य रहे गुरूकुल कांगड़ी के पूर्व उपकुलपति डा. वेद प्रकाश शास्त्री ने एक वेद मन्त्र का उच्चारण कर कहा कि वह आचार्य जी को प्रणाम करते हैं, उन्हें नमन करते हैं और उनसे प्रार्थना भी करते हैं। उन्होंने कहा कि उनकी स्मृति को चिरस्थाई करने में शिक्षण संस्थान योगदान कर सकते हैं।

उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में आचार्य जी के नाम पर एक **''वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार शोध संस्थान''** की स्थापना करने का प्रस्ताव किया। उन्होंने कहा कि ऐसा करके ही हम आचार्य जी को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। डा. सुभाष वेदालंकार जी, जयपुर ने भी सभा को सम्बोधित कर आचार्य जी को अपनी श्रद्धांजलि भेंट की। अम्बाला के श्री वेद प्रताप वेदालंकार ने अपनी श्रद्धांजलि में बताया कि गुरूकुल में वेतन कम मिलता था। अधिक धनोपार्जन की दृष्टि से आचार्यजी को कहीं और नौकरी करने का परामर्श व सुझााव दिया गया तो उत्तर में आचार्य जी ने कहा था कि **''गुरूकुल मेरी मां है। कौन मां चाहेगी कि उसका बच्चा उसके जीते जी उसको छोड़कर चला जाये? उन्होंने इस अवसर पर कहा था कि मैं अपनी माता की आजीवन सेवा करूंगा। और उन्होंने आजीवन सेवा की भी।''**

डा. जयदेव वेदालंकार ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा कि उनका हर शिष्य यह समझता था कि आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी उन्हें सबसे अधिक स्नेह करते थे। गुरूकुल चोटीपुरा की आचार्या डा. सुकामा जी ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा कि सन् 1986 में एक–दो वर्ष आचार्य जी के पास रहकर उन्होंने अपने शोध कार्य को पूर्ण किया था। **आचार्य जी में यह गुण व क्षमता थी कि वह किसी विद्यार्थी में शोध की वृत्ति को उत्पन्न कर सकते थे।** उन दिनों आचार्यजी सामवेद भाष्य कर रहे थे। उनके पास हमने वेदों को पढ़ना सीखा। हमने जीवन व स्वभाव में उन्हें कोमल से कोमल अनुभव किया। उनके जीवन में ब्राह्म और क्षात्र दोनों गुणों का समन्वय था। उनके लेखन में भी यह दोनों गुण परिलक्षित होते थे। डा. विजय वीर, हैदराबाद ने आचार्य जी को श्रद्धाजलि दी और स्वरचित कविता का पाठ किया। गुरूकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के कुलपति डा. हरिगोपाल शास्त्री ने भी आचार्य जी को श्रद्धांजलि दी और और उनकी स्तुति में एक संस्कृत श्लोक का पाठ किया। आचार्य जी के युवा शिष्य डा. दिनेश चन्द्र शास्त्री ने आचार्यजी पर स्वरचित सस्कृत श्लोको को गीत रूप में गाकर श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि आचार्य जी के शिष्य, जो जहां है, वह उनकी सुगन्ध को सर्वत्र फैला रहें हैं। वरिष्ठ वैदिक विद्वान डा. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि उन्होंने आचार्यजी से विद्या का पाठ किया है। आचार्यजी नारीयल के समान थे जो ऊपर से कठोर किन्तु अन्दर से स्वादिष्ठ व पौष्टिक जल के समान कोमल

व सुस्वादु। वह अपने सभी शिष्यों को आगे बढ़ने को प्रेरित व प्रोत्साहित करते थे। **आचार्य जी बहुत कम बोलते थे। वह साक्षात वेद मूर्ति थे। उन्होंने कहा कि आचार्य जी की स्मृति में एक वेद विद्या पुरूस्कार स्थापित होना चाहिये।** आयोजन में पधारे स्वामी रामदेव जी के प्रतिनिधि स्वामी गणेशानन्द जी ने भी आचार्य जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि **उन्होंने वेदों की ऋषि परम्परा को आगे बढ़ाने का दिव्य कार्य किया। उन्होंने वेद के कार्य के लिए अपनी आत्मा की आहुति दी। उन्होंने आगे कहा कि हमें वेद विद्या को पुनः प्राचीन स्वरूप में स्थापित करना है।** श्री मन मोहन कुमार आर्य, देहरादून ने भी आचार्य जी को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि हमें

आचार्य जी के जीवन के अनुरूप स्वयं का जीवन बनाना है। हम सब आचार्य जी के मानस पुत्र हैं और अपने आचरण को श्रेष्ठ व आचार्यजी के अधिकाधिक अनुरूप बनाने का प्रयास कर व उसे बनाकर ही हम आचार्यजी को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। उन्होंने इस अवसर पर आचार्य जी के सम्पर्क में आने की अपनी पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला। आचार्य जी की दौहित्री श्रीमति दीप्ति जी व उनके अनेक परिवारजनों ने भी उन्हें अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की और उनसे जुड़े कई प्रेरक संस्मरण सुनाये। आयोजन में स्वामी यतीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के किसी एक योग्य संस्कृत छात्र को आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी की स्मृति में प्रत्येक वर्ष एक स्वर्ण पदक दिये जाने के संकल्प की सूचना डा. महावीर अग्रवाल जी ने सभा में घोषित की। गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डा. सरेन्द्र कुमार जी ने घोषणा की कि वह आचार्यजी की स्मृति में एक शोधपीठ स्थापना के लिए हर सम्भव प्रयास करेंगे। श्रद्धांजलियों का क्रम समाप्त होने पर सभा के अध्यक्ष प्रो. सुभाष विद्यालंकार जी का प्रेरक उद्बोधन हुआ। उन्होंने आयोजन को सफल बताया। कार्यक्रम का अवसान आचार्यजी के यशस्वी पुत्र डा. विनोद चन्द्र विद्यांलकार जी के समापन भाषण से हुआ जिसमें उन्होंने आयोजन से सम्बन्धित विषयों व उसके कुछ पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। आयोजन में बहुत बड़ी संख्या में आचार्य जी के शिष्य व प्रशंसक उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा व आदर के भावों को हृदय में संजोए हुए कृतज्ञ भाव से उपस्थित थे। हरिद्वार के एक भव्य हाल में यह आयोजन सम्पन्न हुआ। अनेक प्रमुख विद्वान वक्ताओं को समयाभाव के कारण समय नहीं दिया जा सका। हाल के अन्दर ही श्री घूड़मल प्रह्लादकुमार आर्य न्यास, हिण्डोन सिटी के प्रकाशनों का एक भव्य स्टाल लगाया गया था जहां श्रुति–मन्थन, मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण तथा अनेक प्रसिद्ध व चर्चित ग्रन्थों विक्रयार्थ उपलब्ध थे और स्टाल पर पुस्तक प्रेमियों की उत्साहवर्धक भीड़ दृष्टिगोचर हो रही थी। सभागार में सभी विद्वानों व श्रोताओं तथा अतिथियों के लिए जलपान का प्रबन्ध भी किया गया था। मध्यान्ह 2.30 बजे से आरम्भ होकर सायं लगभग 6.30 बजे तक जन्मशती महोत्सव एवं श्रद्धांजलि समारोह चलकर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

**–मनमोहन कुमार आर्य**
**पताः 196 चुक्खूवाला–2**
**देहरादून–248001**
**फोनः 09412985121**